भारतीय समाज में **गतिशीलता (Mobility)** और **परिवर्तन (Change)** की प्रवृत्तियाँ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव से निरंतर विकसित हो रही हैं। गतिशीलता का अर्थ है व्यक्ति या समूह का अपनी सामाजिक, आर्थिक या पेशागत स्थिति में ऊपर या नीचे की ओर स्थानांतरण, जबकि परिवर्तन का अर्थ है समाज की संरचना, मूल्यों, व्यवहार और संस्थाओं में दीर्घकालिक बदलाव।

---

1. पारंपरिक से आधुनिक समाज की ओर संक्रमण

भारत का पारंपरिक समाज जाति-व्यवस्था, कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था और संयुक्त परिवार व्यवस्था पर आधारित था। इसमें गतिशीलता सीमित थी क्योंकि जाति और जन्म से तय पेशे बदलना लगभग असंभव था। औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा के प्रसार और लोकतंत्र के आगमन ने इस संरचना को तोड़ा और व्यक्तियों को पेशा, शिक्षा और निवास बदलने के अवसर दिए।

---

2. सामाजिक गतिशीलता के नए पैटर्न

- **ऊर्ध्व गतिशीलता (Upward Mobility)** – शिक्षा, आरक्षण नीति और रोजगार के नए अवसरों ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों को उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तक पहुँचने में मदद की।
    - *उदाहरण:* दलित मध्यवर्ग का उभार, आईएएस/आईपीएस में वंचित वर्गों की बढ़ती भागीदारी।
- **अधो गतिशीलता (Downward Mobility)** – आर्थिक संकट, बेरोजगारी और खेती से आय में गिरावट के कारण कुछ वर्गों की स्थिति पहले से खराब हुई है।
- **क्षैतिज गतिशीलता (Horizontal Mobility)** – पेशा बदलना लेकिन सामाजिक स्तर में विशेष परिवर्तन न होना।
    - *उदाहरण:* शिक्षक से बैंक कर्मचारी बनने तक का बदलाव।

---

3. आर्थिक और पेशागत परिवर्तन

- हरित क्रांति, सूचना प्रौद्योगिकी, और सेवा क्षेत्र के विस्तार ने कृषि से उद्योग व सेवा क्षेत्र की ओर रोजगार का रुख मोड़ा।
- स्टार्टअप संस्कृति और उद्यमिता ने युवाओं को नए आर्थिक अवसर दिए, जिससे जाति आधारित पेशे कमज़ोर हुए।

---

4. राजनीतिक परिवर्तन और सशक्तिकरण

- **लोकतंत्र और आरक्षण नीति** ने राजनीतिक भागीदारी का विस्तार किया।
- पिछड़े और दलित नेताओं का उदय – कांशीराम, लालू प्रसाद यादव, मायावती – ने सत्ता के सामाजिक आधार को बदला।
- पंचायत राज में महिलाओं और वंचित वर्गों की भागीदारी से जमीनी स्तर पर सत्ता का विकेंद्रीकरण हुआ।

---

5. सांस्कृतिक परिवर्तन

- शिक्षा और मीडिया ने पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती दी।
- अंतर्जातीय और अंतरधार्मिक विवाहों में वृद्धि, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में।
- पश्चिमी उपभोक्तावादी संस्कृति और वैश्वीकरण का असर – जीवनशैली, खानपान और फैशन में बदलाव।

---

6. प्रवासन और वैश्वीकरण के प्रभाव

- ग्रामीण से शहरी प्रवासन ने पारंपरिक सामाजिक नियंत्रण को कमजोर किया।
- विदेश प्रवासन (NRIs, IT पेशेवर) ने आर्थिक स्थिति में सुधार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान दोनों को बढ़ावा दिया।
- *उदाहरण:* पंजाब और केरल के ग्रामीण इलाकों में प्रवासी आय से सामाजिक-आर्थिक स्थिति में तेज़ बदलाव।

---

7. चुनौतियाँ और विरोधाभास

- आधुनिकीकरण के बावजूद जातिगत भेदभाव, लिंग असमानता और आर्थिक असमानता कायम।
- शिक्षा और रोजगार के अवसरों में क्षेत्रीय और वर्गीय असमानताएँ।
- पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच टकराव।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में गतिशीलता और परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ तेज़ हो रही हैं, जहाँ जाति आधारित स्थिरता की जगह शिक्षा, पेशा और आर्थिक अवसरों पर आधारित लचीला ढांचा उभर रहा है। फिर भी, असमानता, क्षेत्रीय अंतर और सांस्कृतिक प्रतिरोध यह संकेत देते हैं कि परिवर्तन रैखिक (linear) नहीं बल्कि जटिल और बहुस्तरीय है।

Aspect	Traditional Society	Changing Trends in Indian Society
Social Structure	Caste-based, hierarchical, rigid	Caste weakening, class-based mob
Occupation	Predetermined by birth	Choice-based, driven by skills/educ
Family	Joint family dominance	Nuclear & small families increasing
Mobility	Very limited, mostly ascribed	High mobility due to education, urb
Economy	Agriculture dominant	Service sector, industry, global trad
Culture	Conservative, ritual-bound	Modern, consumerist, hybrid cultur
Women's Role	Restricted, domestic	Greater workforce & political partic
Political Power	Elite-dominated	Inclusive, representation of margin